Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 3

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)** **[10]**

भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है- उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी नहीं चूकता। इसकी समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है। इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है जो कभी नहीं बदलता। वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है। लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं। भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं। इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं। कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है। लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है। प्रकृति में अपना छंद है, लय है। स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता।

संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक-दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं। लय है प्रकृति की विभिन्नता - सामयिकता और ताल है एकत्व - शाश्वतता। इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है। संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति है, न विद्रोह। यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है। “प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है और सामाजिक मंगल की दृष्टि से उनका संयोजन संस्कृति है।”

(i) भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व क्या है? (1)

क) विदेशी संगीत

ख) लोकगीत

ग) आधुनिक धुनें

घ) पश्चिमी संगीत

(ii) भारतीय शास्त्रीय संगीत में नयापन कब उभरता है? (1)

क) हर नए साल में

ख) हर नए गायक के साथ

ग) हर बार प्रस्तुत होने पर

घ) हर नई धुन के साथ

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): भारतीय शास्त्रीय संगीत में शाश्वतता और समकालीनता का अद्भुत मिलन होता है।

कथन (II): भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार पूरी तरह से पश्चिमी शैलियों पर आधारित है।

कथन (III): रागों का निर्माण केवल प्रकृति से प्रेरित धुनों से ही हुआ है।

कथन (IV): लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है और वे शास्त्रीय संगीत की धरोहर बन गए हैं।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

ख) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।

घ) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

(iv) रागों की निर्मितियाँ किससे भी हुई हैं? (1)

(v) भारतीय शास्त्रीय संगीत की समकालीन गुणवत्ता कैसे बनी रहती है? (2)

(vi) लोकगीतों का संबंध किससे है और क्यों? (2)

(vii) संस्कृति का स्वरूप क्या है और यह कैसे बनती है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)** **[8]**

यादें होती हैं गहरी नदी में उठी भँवर की तरह
नसों में उतरती कड़वी दवा की तरह
या खुद के भीतर छिपे बैठे साँप की तरह
जो औचक्के में देख लिया करता है
यादें होती हैं जानलेवा खुशबू की तरह
प्राणों के स्थान पर बैठे जानी दुश्मन की तरह
शरीर में धंसे उस काँच की तरह
जो कभी नहीं दिखता
पर जब-तब अपनी सत्ता का
भरपूर एहसास दिलाता रहता है
यादों पर कुछ भी कहना
खुद को कठघरे में खड़ा करना है
पर कहना मेरी मजबूरी है।

i. **निम्नलिखित काव्यांश के अनुसार, "यादें" किस प्रकार अनुभव होती हैं? सही विकल्प चुनिए: (1)**

I. नदी में उठे भँवर की तरह

II. जानलेवा खुशबू की तरह

III. हल्की और सुखद अनुभूति की तरह

IV. शरीर में धंसे काँच की तरह

विकल्प:

क) केवल I और II सही हैं।

ख) केवल III सही है।

ग) I, II और IV सही हैं।

घ) I, III और IV सही हैं।

ii. **कविता में 'काँच की तरह' से यादों का क्या स्वरूप बताया गया है? (1)**

क) स्पष्ट और चमकदार

ख) खतरनाक और अस्पष्ट

ग) अदृश्य लेकिन महसूस करने योग्य

घ) सुंदर और आकर्षक

iii. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान में रखते हुए, कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कर सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कॉलम 1	कॉलम 2
I. जानलेवा खुशबू	1. दुश्मन की तरह
II. शरीर में धंसा काँच	2. नदी में उठे भँवर की तरह
III. नसों में उतरती कड़वी दवा	3. कड़वे एहसास की तरह

क) I - (1), II - (3), III - (2)

ख) I - (3), II - (2), III - (1)

ग) I - (1), II - (2), III - (3)

घ) I - (2), II - (1), III - (3)

iv. **कविता में 'जानलेवा खुशबू' से यादों का क्या संकेत मिलता है? (1)**

v. **कविता में 'नसों में उतरती कड़वी दवा' और 'शरीर में धंसे उस काँच' के माध्यम से यादों के किस गुण का वर्णन किया गया है? (2)**

vi. **कविता के अनुसार, यादों पर कुछ भी कहना क्यों लेखक की मजबूरी है? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

i. **विज्ञापनों का हमारे जीवन पर प्रभाव** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

ii. **क्यों पढ़ूँ मैं हिन्दी** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

iii. **बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

i. उलटा पिरामिड शैली का विकास कहाँ और क्यों हुआ? **[2]**

ii. वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए। **[2]**

iii. **भारतीय कृषि की चुनौती** विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए। **[2]**

iv. नाटक को **दृश्य काव्य** की संज्ञा क्यों दी जाती है? **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

i. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है, स्पष्ट करें। **[4]**

ii. अच्छे लेखन में ध्यान रखने योग्य बातों पर प्रकाश डालिए। **[4]**

iii. समाचार लेखन और छह ककारों का क्या संबंध है? उनका उल्लेख करते हुए लिखिए कि उनके आधार पर समाचार क्यों लिखे जाते हैं? **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

i. बच्चे नीड़ से किसलिए झाँक रहे होंगे?

क) बाहर घूमने के कारण | ख) माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण
ग) भूखा होने के कारण | घ) प्रकृति का आनंद लेने के कारण

ii. चिड़िया अपने बच्चों के लिए चिंतित है, यह कैसे स्पष्ट होता है?

क) चिड़िया की उड़ान की गति से | ख) चिड़िया के मंद गति से उड़ने से
ग) चिड़िया द्वारा बच्चों को अकेला छोड़ने से | घ) बहुत दूर तक उड़ने से

iii. प्रस्तुत काव्यांश में कवि किससे प्रभावित होता है?

क) चिड़िया के बच्चों से | ख) चिड़िया के परों की चंचल गति से
ग) अपनी प्रिय से | घ) प्रकृति की अनुपम महिमा से

iv. कवि के पैरों की गति को कौन-सा भाव शिथिल कर देता है?

क) बच्चों की व्याकुलता | ख) चिड़िया की तीव्र उड़ान
ग) कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना | घ) समय का तीव्रगति से व्यतीत होना

v. **दिन जल्दी-जल्दी ढलता है** पंक्ति के माध्यम से किसके महत्त्व को दर्शाया गया है?

क) समय के | ख) कवि के
ग) चिड़िया के | घ) बच्चे के

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. कवि ने खेत की तुलना काग़ज़ से क्यों की है? **छोटा मेरा खेत** कविता के आधार पर लिखिए। **[3]**

ii. **लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप** प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण है। सिद्ध कीजिए। **[3]**

iii. कविता की उड़ान को फूलों के समान बताते हुए भी कवि ने यह क्यों कहा है कि कविता का खिलना फूल क्या जाने? **कविता के बहाने** के संदर्भ में लिखिए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा** - पंक्ति के संदर्भ में अपने क्षेत्र की शरदकालीन सुबह का वर्णन कीजिए। **[2]**

ii. **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता का संदेश लिखिए। **[2]**

iii. **अस्थिर सुख पर दुख की छाया** पंक्ति में **दुख की छाया** किसे कहा गया है और क्यों? **बादल राग** कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीब तो 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर चालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, वहाँ कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

i. गद्यांश के अनुसार श्रम विभाजन की दृष्टि से जाति-प्रथा दोषपूर्ण क्यों है?

क) व्यक्तिगत भावनाओं को ध्यान में रखने के कारण | ख) व्यक्तिगत रुचियों को ध्यान में न रखने के कारण
ग) मनुष्य को स्वतंत्र छोड़े जाने के कारण | घ) मनुष्य के पेशे को पूर्व लेख से जोड़े जाने के कारण

ii. कार्य निर्धारित होने का क्या दुष्परिणाम होता है?

क) कार्य के प्रति दुर्भावना

ख) कार्य अरुचि के साथ करना

ग) कार्यकुशलता का अभाव

घ) सभी विकल्प सही हैं

iii. कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए क्या आवश्यक है?

क) रुचि के अनुसार काम करने का अवसर प्रदान करना

ख) कार्य को जबरन थोपा जाना

ग) उत्पादकता को कम कर देना

घ) कार्य करने की विशेष छूट प्रदान करना

iv. लेखक श्रम के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या किसे मानता है?

क) कार्य के प्रति उदासीन न होने को

ख) स्वेच्छानुसार काम न मिलने को

ग) आर्थिक ढाँचे को

घ) जनसंख्या वृद्धि को

v. आर्थिक पहलू से जाति-प्रथा क्यों हानिकारक है?

क) मनुष्य को आत्मकेंद्रित करने के कारण

ख) मनुष्य की रुचि एवं आत्मशक्ति को कम करने के कारण

ग) मनुष्य को नियमों में रखकर सक्रिय बनाने के कारण

घ) मनुष्य को उन्नति के अवसर प्रदान करने के कारण

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. **पहलवान की ढोलक** पाठ के आधार पर लुट्टन सिंह को कसरत करने का शौक क्यों लगा? **[3]**

ii. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई? **[3]**

iii. आशय स्पष्ट कीजिए - जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?.....मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। **[2]**

ii. **इंदर सेना** सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है? **[2]**

iii. **मेरी कल्पना का आदर्श समाज** के आधार पर बताइए कि लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप किसे कहा गया है। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशनदा से क्यों प्रभावित हैं? **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर लिखिए। **[5]**

ii. **जूझ** कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। **[5]**

iii. सिन्धु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ख) लोकगीत
(ii) ग) हर बार प्रस्तुत होने पर
(iii) क) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।
(iv) रागों की निर्मितियाँ प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी हुई हैं।
(v) भारतीय शास्त्रीय संगीत की समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती और समय के छोटे-छोटे हिस्सों में भी घटित होती है।
(vi) लोकगीतों का संबंध प्रकृति से है क्योंकि प्रकृति में अपना छंद और लय है, जो लोकगीतों में भी झलकता है।
(vii) संस्कृति का स्वरूप प्राकृतिक शक्तियों के सामाजिक मंगल की दृष्टि से संयोजन से बनता है, न कि मनमाने संयोजन से विकृति से। यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है।

2. i. ग) I, II और IV सही हैं।
ii. ग) अदृश्य लेकिन महसूस करने योग्य
iii. क) I - (1), II - (3), III - (2)
iv. 'जानलेवा खुशबू' से यादों का संकेत है कि वे अत्यंत प्रभावशाली और हानिकारक हो सकती हैं, जो कभी भी हानिकारक परिणाम ला सकती हैं।
v. 'नसों में उतरती कड़वी दवा' और 'शरीर में धंसे उस काँच' के माध्यम से यादों की गहराई और उनका दर्दनाक प्रभाव दर्शाया गया है। ये यादें स्थायी और परेशान करने वाली होती हैं।
vi. कविता के अनुसार, यादों पर कुछ भी कहना लेखक की मजबूरी है क्योंकि ऐसा करने से वे खुद को कठघरे में खड़ा महसूस करते हैं और यह उनके लिए एक कठिन और भावनात्मक चुनौती है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **विज्ञापनों का हमारे जीवन पर प्रभाव**

विज्ञापन हमारे आधुनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं, और इनका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव है। विज्ञापन न केवल उत्पादों और सेवाओं की जानकारी प्रदान करते हैं, बल्कि वे हमारे खरीदारी के निर्णय, ब्रांड प्राथमिकताएँ, और जीवनशैली को भी प्रभावित करते हैं।
पहले, विज्ञापन के माध्यम से हमें नए उत्पादों और सेवाओं के बारे में जानकारी मिलती है, जिससे हम बेहतर और सूचित विकल्प चुन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, विज्ञापन हमें मौसमी छूट, विशेष ऑफ़र, और नए ट्रेंड्स के बारे में भी बताता है।
विज्ञापन हमारे मनोविज्ञान पर भी असर डालते हैं। रंगीन और आकर्षक विज्ञापन हमें आकर्षित करते हैं और कभी-कभी बिना आवश्यकता के भी खरीदारी के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
इस प्रकार, विज्ञापन हमारे जीवन को जानकारी, मनोरंजन और प्रेरणा का स्रोत बनाते हैं, लेकिन इसके साथ ही यह आवश्यक है कि हम इन प्रभावों को समझें और विवेकपूर्ण निर्णय लें। विज्ञापन ने लोगों के मस्तिष्क में एक धारणा बनाई है जिसका विज्ञापन अधिक हो वह 'ब्रांडेड' होता है और जिसका विज्ञापन नहीं होता है वह 'लोकल और खराब' होता है। लोगों की इसी धारणा की वजह से छोटे उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुएं उपभोक्ता ज्यादातर नहीं खरीदते हैं। आज विज्ञापन हर क्षेत्र में उपलब्ध हैं। विज्ञापन के कारण विश्व बाजार का सिद्धांत सामने उभरकर आया है। वर्तमान समय में विज्ञापन का महत्व दिन प्रतिदिन और बढ़ता जा रहा है। विज्ञापन का पूरा कारोबार "जो दिखता है वही बिकता है" की तर्ज पर चल रहा है। आज के समय में तो ऐसा हो गया है कि विज्ञापन के माध्यम से मांग पैदा की जा रही है।

(ii) **क्यों पढ़ूँ मैं हिन्दी**

हिन्दी भाषा हमारे देश की पहचान और संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसे पढ़ने के कई महत्वपूर्ण कारण हैं।
सबसे पहले, हिन्दी हमारी मातृभाषा है और इसे जानना हमारे सांस्कृतिक धरोहर को समझने और संजोने में मदद करता है। हिन्दी साहित्य में अनेक महान कवियों और लेखकों ने अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया है, जिन्हें पढ़कर हम अपने समाज और इतिहास के बारे में गहराई से जान सकते हैं।
दूसरे, हिन्दी भाषा का ज्ञान हमें देश के विभिन्न हिस्सों में संवाद स्थापित करने में सहायक होता है। भारत एक विविधताओं से भरा देश है, और हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो अधिकांश भारतीयों द्वारा समझी और बोली जाती है। इससे हमें विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से जुड़ने और उनकी संस्कृति को समझने में मदद मिलती है।
तीसरे, हिन्दी भाषा का अध्ययन हमारे मानसिक विकास में भी सहायक होता है। यह हमारी सोचने की क्षमता को बढ़ाता है और हमें विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा, हिन्दी भाषा का ज्ञान हमें अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने में भी मदद करता है, क्योंकि कई भारतीय भाषाओं की जड़ें हिन्दी में ही हैं।
अंत में, हिन्दी भाषा का अध्ययन हमें रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। आजकल कई सरकारी और निजी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। मीडिया, साहित्य, अनुवाद, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का ज्ञान हमें एक महत्वपूर्ण स्थान दिला सकता है।
इस प्रकार, हिन्दी भाषा का अध्ययन न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने में मदद करता है, बल्कि यह हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(iii) **बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ**

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का उद्देश्य

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में निरंतर घट रही महिलाओं की जनसंख्या के अनुपात को संतुलित करने के साथ-साथ उनके हक एवं अधिकारों की पूर्ति करना भी है। भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को प्रदत्त अधिकार जैसे शिक्षा का अधिकार, समान सेवा का अधिकार तथा सम्मान के साथ जीने के अधिकार को सुनिश्चित करता है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना सन् 2015 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासो तथा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आरंभ की गई। हालाकि इस योजना की शुरुआत हरियाना प्रदेश से हुई पर आज भारत के प्रत्येक प्रदेश में इसका पालन पुरी इमानदारी का साथ किया जा रहा है। और इस योजना का साकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। आज इस योजना के तहत बेटियों को एक नई प्रतिभा का विकास एवं लोगों के अंदर बेटियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच का संचार बहुत तेजी से हो रहा है।

इस योजना के तहत सबसे पहले सम्पूर्ण भारत में पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम, 1994 को लागू किया गया है। कोई भी ऐसा करते पकड़ा गया तो उसके लिए कड़े दंड के प्रावधान हैं। साथ ही साथ यदि कोई चिकित्सक भ्रूण लिंग परीक्षण करते या भ्रूण हत्या का दोषी पाया गया, तो उसे अपने लाइसेंस रद्द के साथ- साथ भयंकर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। इसके लिए कानूनी कार्यवाही के आदेश हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से शुरू हो गया था पर इसका विकास अमेरिका के गृहयुद्ध के दौरान हुआ था। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ संदेश के जरिये भेजनी पड़ती थी, जिसकी सेवायें अनियमित, महंगी और दुर्लभ थी। यही नहीं कई बार तकनीकी कारणों से टेलीग्राफ सेवाओं में बाधा भी आ जाती थी।

(ii) कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी को सार्वजनिक करना 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहलाता है। यह सरकारी सूत्र पर आधारित पत्रकारिता है।

(iii) **भारतीय कृषि की चुनौती**

ऐसे समय में, जब खाद्य पदार्थों की कीमतें आसमान छू रही हैं और दुनिया में भुखमरी अपने पैर पसार रही है, जलवायु-परिवर्तन से संबंधित विशेषज्ञ हमें आगाह कर रहे हैं कि आने वाले वक्त में हम और भी भयावह स्थिति का सामना कर सकते हैं। दिनों-दिन बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण भारत की कृषि-क्षमता में लगातार गिरावट आती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक इस क्षमता में 40 फ़ीसदी तक की कमी हो सकती है। (ग्लोबल वार्मिंग एंड एग्रीकल्चर, विलियम क्लाइन)।

कृषि के लिए पानी और ऊर्जा दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण तत्व हैं, लेकिन बढ़ते तापमान की वजह से दोनों की उपलब्धता मुश्किल होती जा रही है। तापमान बढ़ने के साथ ही देश के एक बड़े हिस्से में सूखे और जल संकट की समस्या भी बद से बदतर होती जा रही है। एक तरफ वैश्विक तापमान से निपटने के लिए जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल पर ब्रेक लगाने की जरूरत महसूस की जा रही है। वहीं दूसरी ओर कृषि-कार्य के लिए पानी की आपूर्ति के वास्ते बिजली की आवश्यकता भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सबसे बड़ा सवाल तो यही उठेगा कि आखिर भारतीय कृषि की यह माँग कैसे पूरी की जा सकेगी।

(iv) नाटक को "दृश्य काव्य" की संज्ञा इसलिए दी जाती है क्योंकि यह रंगमंच पर दृश्यों, भावनाओं, चरित्रों, और काव्यात्मक तत्वों के माध्यम से एक कहानी को प्रस्तुत करता है। इसमें विविध भाव, संघर्ष और रस प्रकट होते हैं जो दर्शकों को प्रभावित करते हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को संबंधित विषय के बारे में जानकारी और दिलचस्पी होना पर्याप्त है जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए सामान्य खबरों से आगे बढ़कर विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों, समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करके पाठकों या दर्शकों को वास्तविकता बतानी होती है।

(ii) एक अच्छे लेखन में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

- छोटे वाक्य लिखें। जटिल वाक्यों से बचें। सरल वाक्य संरचना पर जोर दें।
- आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का प्रयोग करें।
- गैर जरूरी शब्दों के इस्तेमाल से बचें।
- अच्छा लिखने के लिए प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाएँ पढ़ें।
- मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोग से लेखन में रंग भरें।
- अपने लिखे को पुनः पढ़ें तथा अशुद्धियों को दूर करें।
- लिखते समय ध्यान रखिए कि आपका उद्देश्य अपनी भावनाओं, विचारों और तथ्यों को प्रकट करना है. न कि दूसरे को प्रभावित करना।
- एक अच्छा लेखक पूरी दुनिया से लेकर अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं पर पैनी नज़र रखता है।
- एक अच्छे लेखक में तथ्यों को जुटाने और किसी विषय पर बारीकी से विचार करने का पर्याप्त धैर्य होना चाहिए।

(iii) समाचार लेखन में छह कारक (कौन, क्या, कब, कहाँ, कैसे, क्यों) का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये कारक समाचार के प्रश्नों का उत्तर देने में मदद करते हैं और समाचार के पीछे के विवरणों, तथ्यों और व्याख्यानों को प्रस्तुत करते हैं। इन कारकों के आधार पर समाचार लेखन करके पाठकों को वास्तविकता, संदर्भ, विश्लेषण और समझ में मदद मिलती है।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?

मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(i) **(ख)** माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण
व्याख्या:
माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण

(ii) **(क)** चिड़िया की उड़ान की गति से
व्याख्या:
चिड़िया की उड़ान की गति से

(iii) **(क)** चिड़िया के बच्चों से
व्याख्या:
चिड़िया के बच्चों से

(iv) **(ग)** कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना
व्याख्या:
कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना

(v) **(क)** समय के
व्याख्या:
समय के

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) खेत की तुलना कागज़ से करते हुए वस्तुतः कवि ने रचना-कर्म की तुलना कृषि कर्म से की है। कवि कागज के पन्ने को चौकोने खेत की संज्ञा देता है। कवि का मानना है कि जिस प्रकार खेत में बीज, जल, रसायन आदि डालने के बाद उपज या पैदावार प्राप्त की जाती है, ठीक उसी प्रकार कोई भी रचना भाव, कल्पना इत्यादि के कारण अस्तित्व में आती है।
शब्द रूपी बीज को खेत रूपी कागज के पन्ने पर डालने के बाद अंधड़ रूपी भावनाएँ तथा कल्पना रूपी रसायन की आवश्यकता पड़ती है। इन सबके सम्मिश्रण व सामंजस्य के बाद ही रचना अपना स्वरूप ग्रहण कर पाती है। किसी रचना के निर्मित होने में भी कवि को उन्ही प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, जिन प्रक्रियाओं से खेत में फसल उत्पन्न करने में किसी किसान को गुजरना पड़ता है।

(ii) **लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप** प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण है क्योंकि भातृ - शोक में डूबे राम साधारण मनुष्य की तरह विलाप कर रहे थे। उन्हें अपने भाई के बिछड़ने का भय था। वह विलाप करते हुए पिता के वचन न मानने की बात कहते हैं और नारी की हानि को विशेष क्षति नहीं बताते हैं।

(iii) कविता कालजयी होती है। व फूलों के समान खिलकर लोगों को आनंदित करती है जबकि फूल के खिलने के साथ ही उसका अंत भी निश्चित होता है इसलिए वह कविता के कालजयी होने के मर्म से अंजान रहता है। वह तो केवल खिलना, महकना और मुरझा जाना ही जानता है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) प्रस्तुत पंक्ति 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' कवि आलोक धन्वा जी के द्वारा रचित कविता 'पतंग' से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने भादो (बारिश का मौसम) के बाद की शरदकालीन प्रकृति का वर्णन किया है। हमारे क्षेत्र की शरदकालीन सुबह खरगोश की आँखों जैसा लाल-भूरा मालूम पड़ता है। आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है। प्रकृति खिली-खिली नज़र आती है। फूलों पर तितलियाँ मंडराने लगती हैं। लोग बेहद आनंदित नज़र आते हैं।

(ii) रघुवीर सहाय की कविता "कैमरे में बंद अपाहिज" एक व्यंग्यात्मक रचना है जो मीडिया की संवेदनहीनता और व्यावसायिकता पर तीखा प्रहार करती है। इस कविता में कवि ने दिखाया है कि कैसे टेलीविजन कार्यक्रम संचालक एक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को केवल अपने कार्यक्रम की सफलता और दर्शकों की सहानुभूति पाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।
मुख्य संदेश

i. **संवेदनहीनता:** कविता में दिखाया गया है कि मीडिया कर्मी अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को समझने के बजाय, उसे एक वस्तु की तरह प्रस्तुत करते हैं। वे उससे बेतुके और असंवेदनशील प्रश्न पूछते हैं, जैसे "आप अपाहिज क्यों हैं?" और "आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा|
ii. **व्यावसायिकता:** कवि ने यह भी बताया है कि मीडिया के लिए किसी की पीड़ा केवल एक व्यापारिक वस्तु है। वे अपाहिज व्यक्ति की करुणा को बेचकर अपने कार्यक्रम को अधिक लोकप्रिय बनाने की कोशिश करते हैं|
iii. **मानवता का अभाव:** कविता में यह भी उजागर किया गया है कि मीडिया कर्मियों में मानवता और संवेदनशीलता का अभाव है। वे केवल अपने स्वार्थ के लिए किसी की पीड़ा का उपयोग करते हैं और उसे अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचाने की कोशिश करते हैं|

(iii) कवि ने समाज में पूँजीपतियों द्वारा किए गए अत्याचार तथा शोषण को दुख की छाया बताया है। इस शोषण का शिकार प्रायः मज़दूर तथा कमज़ोर वर्ग होते हैं। उनके पास सुख नाममात्र के हैं। इसलिए कवि ने उनके सुख को क्षणिक, चंचल और अस्थिर बताया है। सुख अपनी चमक दिखाकर समाप्त हो जाता हैं। यह सुख कुछ पल के लिए भी नहीं रूक पाता है क्योंकि शोषण तथा अत्याचार इन वर्ग के लोगों को जीने नहीं देते हैं। शोषण के कारण गरीब और गरीब होता जा रहा है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि

आज के उद्योगों में गरीब तो 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर चालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, वहाँ कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

(i) **(घ)** मनुष्य के पेशे को पूर्व लेख से जोड़े जाने के कारण
व्याख्या:
मनुष्य के पेशे को पूर्व लेख से जोड़े जाने के कारण

(ii) **(घ)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या:
सभी विकल्प सही हैं

(iii) **(क)** रुचि के अनुसार काम करने का अवसर प्रदान करना
व्याख्या:
रुचि के अनुसार काम करने का अवसर प्रदान करना

(iv) **(ख)** स्वेच्छानुसार काम न मिलने को
व्याख्या:
स्वेच्छानुसार काम न मिलने को

(v) **(ख)** मनुष्य की रुचि एवं आत्मशक्ति को कम करने के कारण
व्याख्या:
मनुष्य की रुचि एवं आत्मशक्ति को कम करने के कारण

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लुट्टन सिंह बचपन में ही अनाथ हो गया था। बचपन में लुट्टन गाय चराता था तथा कसरत करता था। लुट्टन की सास को गाँव के लोग तरह-तरह की तकलीफें देते थे। उसकी देखभाल उसकी सास ने ही की थी। गाँव के लोग उसकी सास को अनेक प्रकार से परेशान करते थे क्योंकि वह विधवा थी। अतः गाँव वालों को सजा देने के लिए ही उसने पहलवानी का शौक अपनाया।

(ii) महादेवी, भक्तिन को नहीं बदल पायी पर भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया। भक्तिन देहाती महिला थी और शहर में आने के बाद भी उसने अपने-आप में कोई परिवर्तन नहीं आने दिया। भक्तिन देहाती खाना गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे दाने, बाजरे के तिल वाले पुए आदि बनाती थी और महादेवी को वैसे ही खाना पड़ता था। भक्तिन के हाथ का मोटा-देहाती खाना खाते-खाते महादेवी का स्वाद बदल गया और वे भक्तिन की तरह ही देहाती बन गई।

(iii) इन पंक्तियों का आशय सच्चा कवि बनने से है। लेखक के अनुसार यदि श्रेष्ठ कवि बनना है तो अनासक्त और फक्कड़ बनना होगा जैसे कबीरदास थे। अनासक्त भाव से व्यक्ति तटस्थ रहकर आत्म निरीक्षण कर पाता है और फक्कड़ स्वभाव का होने से वह सांसारिक आकर्षणों से दूर रहता है। यदि वह अपने कार्यों का लेखा-जोखा, हानि-लाभ आदि मिलाने में उलझ जायेगा तो फक्कड़ नहीं बन पायेगा जिससे वह कवि भी नहीं बन पायेगा। कवि बनने के लिए फक्कड़ और अलमस्त ,बेपरवाह स्वभाव का होना आवश्यक है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं। दुकानदार कभी-कभी ग्राहक की आवश्यकताओं का भरपूर शोषण करते हैं जैसे कभी कभी जीवनपयोगी वस्तुओं (चीनी, गैस, प्याज, टमाटर आदि) की कमी हो जाती है। उस समय दुकानदार मनचाहे दामों में इन चीजों की बिक्री करते हैं। ग्राहक भी अपनी दैनिक आवश्कताओं के कारण सबकुछ जानते हुए बाजार के शोषण का शिकार बन जाता है।

(ii) भारतीय समाज-संस्कृति में गंगा सबसे पूजनीय नदी और जल का आदिम स्रोत्र मानी जाती है। जिसका इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे ही अधिकांश मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं। बड़े-बड़े नगर, तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश में भारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे और इसलिए इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है।

(iii) लेखक के अनुसार लोकतंत्र केवल शासन पद्धति नहीं है। यह तो सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान है। इसमें अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होता है। यह समाज के निर्माण में पारस्परिक सहयोग और भेदभाव का पूरी तरह से त्याग है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू पर किशनदा का पूर्ण प्रभाव था क्योंकि उन्होंने यशोधर बाबू को कठिन समय में सहारा दिया। यशोधर भी उनकी हर बात का अनुकरण करना चाहते थे। चाहे ऑफ़िस का कार्य हो, सहयोगियों के साथ संबंध हो, सुबह की सैर हो, शाम को मंदिर जाना, पहनने-ओढ़ने का तरीका, किराए के मकान में रहना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाने की बात आदि – इन सब पर किशनदा का प्रभाव है। बेटे द्वारा ऊनी गाउन उपहार में देने पर उन्हें लगता है कि उनके अंगों में किशनदा उतर आए हैं क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया कि इस आधुनिकता के दौड़ में गृहस्थ होकर भी वह उतने ही अकेले हैं जितने कि किशनदा।

(ii) 'जूझ' कहानी में ग्रामीण जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। गाँव में किसान, जमींदार आदि कई वर्ग हैं। लेखक स्वयं कृषिकार्य करता है। उसके पिता बाजार में गुड़ के ऊँचे भाव पाने के लिए गन्ने की पेराई जल्दी करा देते हैं। गाँव में पूरा परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है, चाहे बच्चे हों, महिलाएँ हों या वृद्ध। कुछ बड़े जमींदार भी होते हैं जिनका गाँव पर काफी प्रभाव होता है। गाँव में कृषक बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर कम ध्यान देते

हैं जबकि अपनी अय्याशी के चक्कर में बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। ग्रामीण स्कूलों में बच्चों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते। बच्चों को घर व स्कूल का काम करना पड़ता था जैसे- ढोर चराना, खेतों में पानी लगाना आदि।

(iii) दूसरी सभ्यताएँ राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित थी। वहाँ बड़े-बड़े राजाओं के महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ पिरामिड और मन्दिर मिले हैं। राजाओं, धर्माचार्यों की समाधियाँ भी मौजूद हैं। किंतु सिन्धु सभ्यता, एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परंतु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है। सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, दूसरी सभ्यताओं से अलग एवं स्वाभाविक, किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबर रहित थी जबकि अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल, मंदिर और मूर्तियाँ बनाई गई किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली हैं। वहाँ खुदाई में प्राप्त नरेश का मुकुट इतना छोटा है कि उससे छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिन्धु सभ्यता सम्पन्न थी परन्तु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।